

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ पुणे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५२२२ (२५१)

ग्रंथ नाम पद संग्रह ओव्या.

विषय मराठी काव्य.

(1)

५१६१५२५९

आवदी मज्जिमापाव्यात्तु जीव
यापाया-ची गुणध्याया-चीरुपेध्या
या-चीरोआ०॥ क्र०॥ जपदहस्रहस्रहस्र
ठेनी॥ सादरपयेनिधेनाळ॥ १॥ १॥ १॥
पदपन्नांनीत तुम्हा उदरी भुशित
काळियकाळा ॥ २॥ गोनींदसु
ततुजअतिशरणांगत॥ १॥ १॥ १॥
मकक्रुपाळा॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
गुणकीतीनदनीनदनेअगमनीग
मयाअगमाचोया०॥ क्र०॥ सहस्र

॥ रत्नाक्षर पारक सैन ॥ १० ॥ होइ लख तरासु
गमक सैन्याचे ॥ १० ॥ या ससु कादिक
ठकले जेथे ॥ गोपिमनोरथ पुरनिव
से ॥ १० ॥ ॥ २ ॥ सच तस्व हा लाघ
विमोटा ॥ मा पय रे हा हा नो बी ॥
तसे जा ॥ १० ॥ ॥ ३ ॥
॥ राम हर्द ॥ नासी निधा मित्रा स्वमि
॥ १० ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

(3)

तौ॥समागमेयेतौ॥१॥अमंग॥राम
नामावीनतांडे॥तौचिजानाचर्मकुंडे॥१॥
हासनाहेविठलाचा॥तौचिलेकदोबा
पाचा॥२॥करीसंताचाअकरा॥तौचि
जानापापीनर॥३॥तुकाहणेतयोदिव
सी॥रंडगेलीमांगापासी॥४॥५॥अमंग
नलगेतुसीमतिनलगेतुसीमुक्ति॥साप
डसितेयुक्तिवेगळीच॥१॥नलगेतुसा
तपनलगेतुसातपन॥पाडसितेमापवेग
ळेची॥२॥नलगेतुसातपननलगेतुसे
ध्याना॥सापडसितेमापवेगळीच॥३॥
नलगेतुआचारनलगेतुविचार॥साप
डसितेद्वारवेगळेचि॥४॥नामाधणना
मगाउनिर्विकल्प॥येसीआपाआपगव
सीता॥५॥६॥बोबी॥अथर्वनचढमहा
दरीद्रीनलेनसेवेकदा॥निंदित्याचि
नकरीनिंदा॥तोनारायणनररुपा॥
परा॥सेवासदुरुपायआधीरबापनोस
व्यर्थकायपुसतासमाधीरेबा
नित्यानित्यविचारअप

॥ वा ॥ सुखसंतोचामार्गधरा
 ॥ ध्या ॥ वासनेचाठावपुसावा ॥ वैरा
 ॥ ग्या ॥ आश्रयधराधारे ॥ ११ ॥ शंती
 ॥ क्षेमाबहुत आदरावी ॥ दुर्जनाची संगति
 ॥ गावी ॥ मनोभंगाची कीयानसावी ॥ अहं
 ॥ पनाचिसवेमोडावीरे ॥ १२ ॥ संसारासीउ
 ॥ दासआसावे ॥ परस्त्रीसीयकातनसावा
 ॥ गुह्यज्ञानगुरुसिपुसावे ॥ वारंवारतथे
 ॥ चिलीनवावेरे ॥ १३ ॥ काळआलासावे
 ॥ धवोळखावा ॥ सर्वोठापाहावे वास्त
 ॥ वा ॥ किर्तनाचासायासमोडावा ॥ मीत
 ॥ पनाचामार्गमोडावा ॥ मननिश्चय
 ॥ करोनिशाआधी ॥ ज्ञानाकेवळस
 ॥ माधी ॥ गुरुवाक्यानि यळकरिवुद्धि
 ॥ मुक्तिदातामु ॥ येमोधीरेबाप
 ॥ नोसेवासद्गुरुपायआधीर ॥ १४ ॥ ध

(4)

(5)

परारिपकी श्लोक दृक्कलनम् । वी नुव
वसुदेवपोहनरीपुरआहे । संपूर्ण
सीकसावि लताहे । अबोसंय न्यामून
मार्गदेई । एरीनेतसेमीतवोनंदगेही
जेजेयेयमुनेह रिपादनमावया । चढ
तसेजळतीर्थकलावया । तबदेवसुदे
वतीयेप्रती । तुजनसेहुचितढळातका
ती ॥ २ ॥ पदा । कलकरोउतरुपारयम
नाभरलीजाये । कलाध । चरणदर्प
विष्णु ^{या} जाल्या । नुगळनमिलपा
या ॥ ७ ॥ नावनसेबहुरात्रंअंधारी । क
वनकरुयाय ॥ २ ॥ गिरधरगो
विंदप्रभुचीलीला । वर्णुआतामाय
चढतचढतगेलीकंडपयेतहाली ।
हरिचरणरलासी स्पर्शतागुध

(6)

॥ जाली ॥ मग उत हने ते हा जानु पर्यंत
॥ डेली ॥ थजक तजळती चे देहि भारी वि
॥ राली ॥ १३ ॥ वसू देव घेवो निळा खरे सी ॥ क
॥ सा चाले ला पावला गोकुळासी ॥ तवे उ
॥ धडे दे विले दार तेथ ॥ पुणो नि गहा मा
॥ जे ने ले तरी ॥ १४ ॥ विनी जली गो च
॥ नी सर्व गो ही ॥ वरि नी जली नंद लो
॥ ही ॥ पुडे नी जनी नंद लो ये सवे सी ॥ तिये
॥ ची सुत उचली लो वर सी ॥ १५ ॥ नकळत
॥ सकळा ते नंद ज्या ये पुढारा ॥ निज सुत व सु
॥ दे ने डे विला नै रा ही रा ॥ सुललिन तनु ती ची
॥ कन्यका आनिये ली ॥ मग नज निते च्य
॥ तल्य की नी जनी ली ॥ १६ ॥ कन्ये सिधे गो

॥ निवाहीर आला ॥ नदीचे तेंढी सींचे
 ॥ कोन आला ॥ तेंवेदे रिवला मार्ग तेंसा
 ॥ चिआहे ॥ उलंघुनि गंगे त्वरे चाला
 ॥ ताहे ॥ जागणमा जिगेला वसू देव
 ॥ तो हो ॥ फिरोनीक पाटे कसेला गले
 ॥ हो ॥ सुता देन की सन्निधि निज वित्त
 ॥ रडे त्या धनी ॥ केवळ मंगल ॥ ५ ॥
 ॥ बोवी ॥ वेगी आठवा जानवी ॥ तब हा
 ॥ ता आली आठवी ॥ केंसद चकलाजी
 ॥ बी ॥ सौण जाले विपरित ॥ ७ ॥ आठवा
 ॥ नरी से डोळा ॥ आठवी पडली माथ्या
 ॥ गंळा ॥ कर्मन सोडि कपाळा ॥ आ
 ॥ लै मरण मज लागी ॥ १२ ॥ भोका ॥ ३
 ॥ रना पहार करणे लण को निगला
 ॥ पद ॥ दुख निवारण जे ॥ तें हे देव

॥ दुनावीजे ॥ १ ॥ बरवाव लु
 ॥ वेने सुसण उनि के लोहवा ॥ सी
 ॥ दुनाळ देता सरगा घर चो कवी ॥
 ॥ पाइ जाता ॥ २ ॥ न वी सण उनी सं
 ॥ घी येला चोडा ॥ ३ ॥ स्तना पानी देता के
 ॥ बाजाला थोडा ॥ ४ ॥ घरी चदुपता
 ॥ उ सण उनि संग येली गुर ॥ त्या
 ॥ चे पाळन पोराण मरि तारेड जाली
 ॥ पोर ॥ ५ ॥ थोड मल पुरे सण उनि
 ॥ मोठ पाके ल्या ॥ ६ ॥ त्या सी भीड न
 ॥ दिता देता न चुके वेळो वेळा ॥ ७ ॥ रघु
 ॥ पती शेराने पोगा पाळा ॥ तुही न क
 ॥ वेळो न्हानीळा ॥ तार कतुची सक
 ॥ ८ ॥ चिकनाम तू हे गाता ॥ ९ ॥

(९)

॥ पद ॥ प्रगट भये भगवान गोकुल मो ॥ ध
॥ नंद धर नौ बंद बाजन लगी ॥ गानत
॥ गुनित नतान ॥ १ ॥ छिल दमो से बज
॥ तिरा जानें हजी के द्वारे ॥ गोकुल मो से
॥ लत है निधान ॥ २ ॥ अबिर गुलाल उडा
॥ बत ॥ गावत गुनित नतान ॥ ३ ॥ छ
॥ वी ॥
॥ तेरे वै व स पाव ॥ १ ॥ पहु डल वै कुं
॥ टराणा ॥ श्री ह बना न जना ॥ गंगे स्था
॥ पिले जाणो नी ॥ १ ॥ करिताना ना साध
॥ ना ॥ जो नय बंसा दिका चे ध्याना ॥ त्या
॥ सिधा लो नि पाव ना ॥ जो जो सणो नि हल
॥ निती ॥ २ ॥ वेद रग खन ये उआया ॥ भोगेंद्र
॥ ज्या ची जाली होया ॥ जो पाव ना नि जो नि
॥ या ॥ लीला दवी भक्त ते ॥ ३ ॥ जो पया धि
॥ दुरय निवासी ॥ पमा से नी पाद पं प्रासी ॥

॥ उरगारिपुत्र हनत्यासौ ॥ पाठ न त्याता ॥
 ॥ उकीजे ॥ ५ ॥ पालरवृत्तेन त्यासुवा सनी ॥
 ॥ तिश्मदद्यादुमनी ॥ उपरती निवृत्ती सदा
 ॥ कामीनी ॥ जो जो इहे हा लवित्ती ॥ ५ ॥ परा
 ॥ अयंति मध्यमा वैरवरी ॥ उजरगातीच्या
 ॥ सीनारी ॥ व्याही मुक्तिनिधीरी ॥ चहुक
 ॥ उनिता उस्त ॥ ६ ॥ ६ ॥ पदा ॥ आरंभि
 ॥ आळ उतुले केतु येदो ॥ आनंदि आदि
 ॥ देवते ॥ ७ ॥ ७ ॥ सकीर्नीनी तु ये
 ॥ बौ ॥ नैकं मुळ ॥ ८ ॥ ८ ॥ धीमुक्ति
 ॥ दिव्यता मनी ॥ ९ ॥ ९ ॥ सर्वो गबोध उम
 ॥ नी ॥ १० ॥ १० ॥ चिन्मय पेमे मातला बोपा हाता ॥
 ॥ सखीदानंद भेटला ॥ ११ ॥ ११ ॥ तयजय
 ॥ श्रीरंगे अमंगे ॥ १२ ॥ १२ ॥ निर्मळ मासंगे
 ॥ सनक विलास तरंगे ॥ १३ ॥ १३ ॥ तसु पेपठ रिपुस
 ॥ मुह सुभंगे ॥ १४ ॥ १४ ॥ तव पद जल न नरंगे ॥

॥ पळती को व्यावधी अघ तुं ॥ १॥ देरुनि
 ॥ लीन अर्पे गे ॥ एक छ आवं दित हो अखा
 ॥ गो ॥ ३॥ ५॥ श्लोक ॥ गंगा तोय समो नास्ती
 ॥ भानु तेज समप्रभा ॥ बांधवानी बलं नास्ती
 ॥ स्त्रीणां परमं सुरवं ॥ १॥ मेघ तोय समो ना
 ॥ स्त्री अस्म चं शु समप्रभा ॥ भुजा वग वनो
 ॥ नौ स्त्री बलं ॥ २॥ परमं सुरवं ॥ २॥
 ॥ मोती गार जळी चकी ॥ जाती येक्या जळामि
 ॥ तरी ॥ जाती गार विराने या हो न विरे मोती
 ॥ ॥ ज्ञा ज्ञा पंरी ॥ साता मुरव ही ब्रंल रूप प
 ॥ तो साता च ब्रंली मीळे ॥ आता नीन म
 ॥ के च जो वरी अहं कर्तु लं नामा नळे ॥ ३॥
 ॥ कदाचि न्नागरी सुर तट निती रे स
 ॥ ॥ ॥ समा करी न्याल सज्ज

(12)

चर

॥ लमुरगीखेचरा ॥ चतुर्बाहुमु

॥ त्वातदुपतीलसत्पीतवसनं ॥ गतोविष्णु

॥ लोकेजननितननीरचमहीमा ॥ शोभते

॥ मिःसुक्तिजीवा ॥ करगतलेवेकस्थपावाकरे

॥ द्वा ॥ सुखासंमंघेहीमांतरगतलवैलाक्षयाच

॥ क्षवर्गा ॥ सुक्तिगच्छतितायसासुनंदिसलीलेप

॥ लकुलस्यकीठ ॥ सुखासंमंघेहीमांतरगतलवैलाक्षयाच

॥ तानुभृता ॥ लानभा ॥ तावत्स्यहं ॥ अंधकः

॥ कुज्जश्चैवराज्यकन्या ॥ यस्थनी ॥ सानकुले

॥ जगन्नाथोविप्रुतोसुपुतोभवे ॥ शार्वरी

॥ पकश्चंद्रोप्रभातेरविदीपकः ॥ त्रैलोक्यदीपको

॥ धर्मोसुपुत्रो ॥ कुलदीपकः ॥ ॥ योजनंभोरि

॥ राहस्यमेघराहस्यद्वादशः ॥ द्वातराशम

(13)

॥ शब्दस्य त्रैलोक्यं सचराचरं ॥ ८ ॥ व्याधः से
॥ विलकाननं सुगहनं सिंहगुहासेवी तं ॥ हंससे
॥ वीतपत्नीनीकुसुमितां गन्धः स्मशानस्थलां सा
॥ धुः सेवितसाधुमेव सततं नीचोपि नीचो जने ॥
॥ आयस्य प्रहं तीस्वभाव जनितादुरवः परित्यज्य
॥ ती ॥ ९ ॥ हृत्परीकर्मिष्ठकतेणुरभाचीणाषक
॥ काले फलमुद्धरं ती ॥ तथानरो भाग्यवीहीनक
॥ ले ॥ विनाशकाले विपरीतबुद्धी ॥ बानीच्याभन
॥ यनकर्तव्यं कृतं मलप्रश्रयं ॥ अज्यासिंहप्र
॥ सादेन आठठगजसत्तकं ॥ १० ॥ गुणा यत्तदे
॥ शासजननदने दुर्जनमुखा ॥ गुणा दोशयत्त
॥ तदुभयमिदं विस्मयपदं ॥ तथा जीमूतो यत्तन
॥ नमुदधेक्षारमधुरं ॥ फणिः पीत्वा क्षीरं वमती ग
॥ रत्नदुः सहतरं ॥ ११ ॥ गुणाः कुर्वती दुत्तत्वं
॥ दुरेपिवसतां सातां ॥ केतकी गंधमा
॥ १२ ॥ घ्राय स्वयंगच्छति शठपद्मा ॥ १३ ॥
॥ तथा खरः चंदनभारवाही भारस्वव्ये चो

॥ न ॥ शानेकी बुंध जने क्रुतमत्सरें ॥ रूपेण
 ॥ की गुणपराक्रम नजितै न ॥ मित्रेण की विष
 ॥ मकाल परागुरेव न ॥ १२ ॥ वक्षामवासीन चरा
 ॥ जपक्षी ॥ ऋणासनस्थो न च राजयोगः ॥ सुव
 ॥ णि वर्णन भवेत्त कांचनं ॥ पुरुषास्य नाम्ना
 ॥ न च राजपुत्रः ॥ १३ ॥ गम्यते च रिमं गेंद्रमं
 ॥ दिरं ॥ तभ्यते यदि कपोलमौलिकं ॥ जंबुका
 ॥ तयगतेन तभ्यते ॥ तस्य पुच्छं च रचर्म रवं
 ॥ उत ॥ १४ ॥ जयति यत्नेन जी चैने शिरशी पु
 ॥ षं शशिकला ॥ तलेन कस्तुरी न च पयसि
 ॥ १५ ॥ जातं गदगतिमा ॥ येनो गेभती प्रिय
 ॥ ॥ निरही जातं धनं लिमा ॥ पुराराती भ्रांत्या
 ॥ कुसुमशरमां किं प्रहरसी ॥ १६ ॥ अर्या ॥ १७
 ॥ विदितप्रमानं देशे जणे वदति विषयरमण
 ॥ ॥ यं ॥ ऐषी ॥ दुष्टं धुतमिष्टं तेषां तिलतैल
 ॥ ॥ वमिष्टं स्यात् ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ शैले शैले नम
 ॥ ॥ पिक्थमौलिकं न गजे गजे ॥ साधवो नाहि
 ॥ ॥ सर्वत्र चंदने न वने वने ॥ १९ ॥ पंडितो

॥ बरोर शत्रु नमुखी हित कारकः ॥ बानरेण हत
 ॥ राजा विप्रश्चोरेण रक्षितः ॥ २५ ॥ उच्छ्वस्य
 ॥ कोपिमही धरोलघुतरो दोर्भीघृतो लीलया
 ॥ तेन लोदिनि भूतले पश्यसे गोवत्सल
 ॥ धनोद्भूतः ॥ त्र्योत्रै लोक्य बहामि कुचयो
 ॥ रमेतद्दृश्यते ॥ किं वा केशव भाशमेणे
 ॥ न बहुना पुण्ये मरीचो लभ्यते ॥ २६ ॥ आदौ र
 ॥ णां कश भवत्करि गंडु सुग्मे ॥ जातं पयोधर
 ॥ भयुक् गं हृदि अंगनायां ॥ तत्रा विवल्भ मनस्व
 ॥ क्षत भेद भिन्नैः ॥ तत्रा भवती यस्मिन्
 ॥ तं विधात्रा ॥ २७ ॥ भाग्यं कुरुते तव गु
 ॥ णान् जानांति कदापि राजगणे ॥ ये दीना
 ॥ धनवर्जिताश्च कृपणा स्वप्नेऽपि नोपश्यन्ती
 ॥ अंबो हं मधुरैः फलै रस भरै रच्यन्ती सकेज
 ॥ ना ॥ हेरं डेतव के गुणा न्मुनिजनान् स्वा
 ॥ दंति ॥ काचि रजनान् ॥ २८ ॥ कक्षः कीभ
 ॥ मपुस्तकं किमुदकं काव्यः पुसारोदकं ॥

(17)

गंधः कीं अथ रामरावणमहासंग्रामगंधो
॥ एकं ॥ पुष्पः किं मम ता उपत्रलीखितं
॥ भो भोगुणाढ्यो भवान् ॥ जीवः कीं ननु
॥ गौडमंत्रलीखितं संजीवनं पुस्तकं ॥ २९
॥ देहेन्द्रियप्राणेन सुखं दुःखं च प्राप्यते ॥
॥ मिदं आध्यात्मिकं तापं जायते दुःखं देहि
नां ॥ ३० ॥ सर्वभूतेषु योगात् सुखं दुःखं
॥ च जायते ॥ किं नैव तापं संतापो सखं चैव
॥ बाधभूतिः ॥ ३१ ॥ शुभाशुभकर्मणा च दे
॥ हं नये सुयातना ॥ स्वर्गे नर्कादिभोक्तव्यं
॥ मिदं देवैर्बाधितं ॥ ३२ ॥ गोप्यः किं माचरन्
॥ यंकुशलस्मरेणुर्दामोदराधरसुधार्मि
॥ गोपिका नो ॥ मुं के स्वयं यदि न शिश्नसं
॥ पिबामो हृष्यस्व चो शुभमुच्यते स्मरनाद्य
॥ आर्यः ॥ ३३ ॥ चित्तं सुखं न भवता हृतं म
॥ तेषु यन्निविष्टं संलुप्तं कश्चिदपि न

॥ ह्यक्रुत्य ॥ पादोपदं न चरित्तो सावपा
 ॥ मूला ॥ धामः कथं ब्रजमथो करवामर्क
 ॥ वा ॥ ३४ ॥ को न्यो शलेपादं सरोज भाजां सु
 ॥ दुर्लभो शेषेषु सुयत्तुषपी हं हं तथापि
 ॥ नारं प्रबुणो निममन ॥ भवस्यदा भोजन
 ॥ निर्मिषेन पो सुकः ॥ ३५ ॥ चिच्चेशो जनको ह्य
 ॥ माचजन नीगाचमात्र स्वशा ॥ ३६ ॥
 ॥ ठीभैरनदं उपाणि सदः ॥ जेशममभा
 ॥ रा ॥ श्रीकरीमन कर्णिका च भगीनी भा
 ॥ र्थमिमेव मती ॥ स कर्माणि मुताः सदैव
 ॥ सत्ता तं कर्त्या ॥ ३७ ॥ वं ममा ॥ ३८ ॥ विद्या
 ॥ भिमानः सुधीभा ॥ न रेयो निरक्षरान्
 ॥ विश्वधनाधिनाथी न ॥ आबधमुक्तान्
 ॥ लटासमिश्य कुलांगनाः ॥ के कुटिलाभ
 ॥ वंती ॥ ३९ ॥ राशदोश्चारी मंत्रेण बहीनि
 ॥ र्थातिपालकं ॥ पुनः प्रवेशेति तत्तमका
 ॥ रस्तुकपाटवत् ॥ ४० ॥ होरणा पयसेवि

॥ न नापकहे पुं तो क पु न ज्या वो पै से बि न भा
 ॥ ई कहे मे रे तो द ख दार हो ॥ पै से बि न मा ता
 ॥ कहे औ गार कौ न जाई यो ॥ पै से बि न जो
 ॥ रु कहे र व प सुरा न भ यो तो हा दे र व बा क
 ॥ रो ॥ १ ॥ ठ का पा ल खी च द त ठ का कर न
 ॥ की लो ल ॥ ठ का शी र च र दुरा व त ठ का
 ॥ शि र आ वा आ द र ॥ २ ॥ आ द र क छु न भ यो
 ॥ पा हु ना भ ग यो ॥ म ग लो गान पार
 ॥ धी द च न जु का ॥ ३ ॥ जा जी का मु र ख
 ॥ आ या द ही छं ड के ॥ सि का ख्या या ॥ राजा
 ॥ जी कु न ही ये बा त ग धे ने र वा यो अ रं ड के
 ॥ पा ता ॥ ४ ॥ भं त नी ज न प ल ठे न ब जु ग जा वे
 ॥ अ ने न ॥ उ च नी च वा वे प र अ र व र सं त
 ॥ के सं त ॥ ५ ॥ फ की र कु फी की र न्या क रे
 ॥ गी दि वा नी ॥ फ की र ज द ह ये न द फी कर
 ॥ च ड म रा व नी ॥ ६ ॥ अ व ल च क री भा के



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com